दादा भगवान परिवार का

मार्च २०२१

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

देख-देखकर बनूँ मैं वैसा

देख-देखकर बनूँ मैं वैसा

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

६ मार्च यानी हमारे प्यारे पूज्यश्री का ज्ञान डे। लेकिन उनके ज्ञान डे का यह साल कुछ कारणवश। बहुत ही विशेष है ?

इस साल पूज्यश्री को ज्ञान लिए पचास साल पूरे होंगे। इट्स अ गोल्डन जूबली। कितनी खुशी की बात है न?

हाँ, हमारे लिए तो यह बहुत आनंद की बात है। लेकिन पूज्यश्री को तो तभी खुशी होगी जब हम किसी को दुःख नहीं देंगे, सभी के साथ हिलमिलकर रहेंगे। भले ही अपने छोटे-छोटे कदम, धीरे-धीरे ही आगे बढ़ाएँ लेकिन ज्ञान मार्ग में आगे चलते रहें, यही हमारी उनके लिए गिफ्ट है।

ऐसा ही हमारा एक मित्र है, आकाश। उसे उस तरह रहना अच्छा लगता है जिससे पूज्यश्री खुश हो जाएँ। उसने अपने आप में किस तरह बदलाव लाया क्या आप जानना चाहेंगे ? तो चलो, इस अंक को पढ़ते हैं।

-डिम्पलभाई मेहता

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वर्ष : ८ अंक : ११
अखंड क्रमांक : ९६
मार्च २०२१

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org

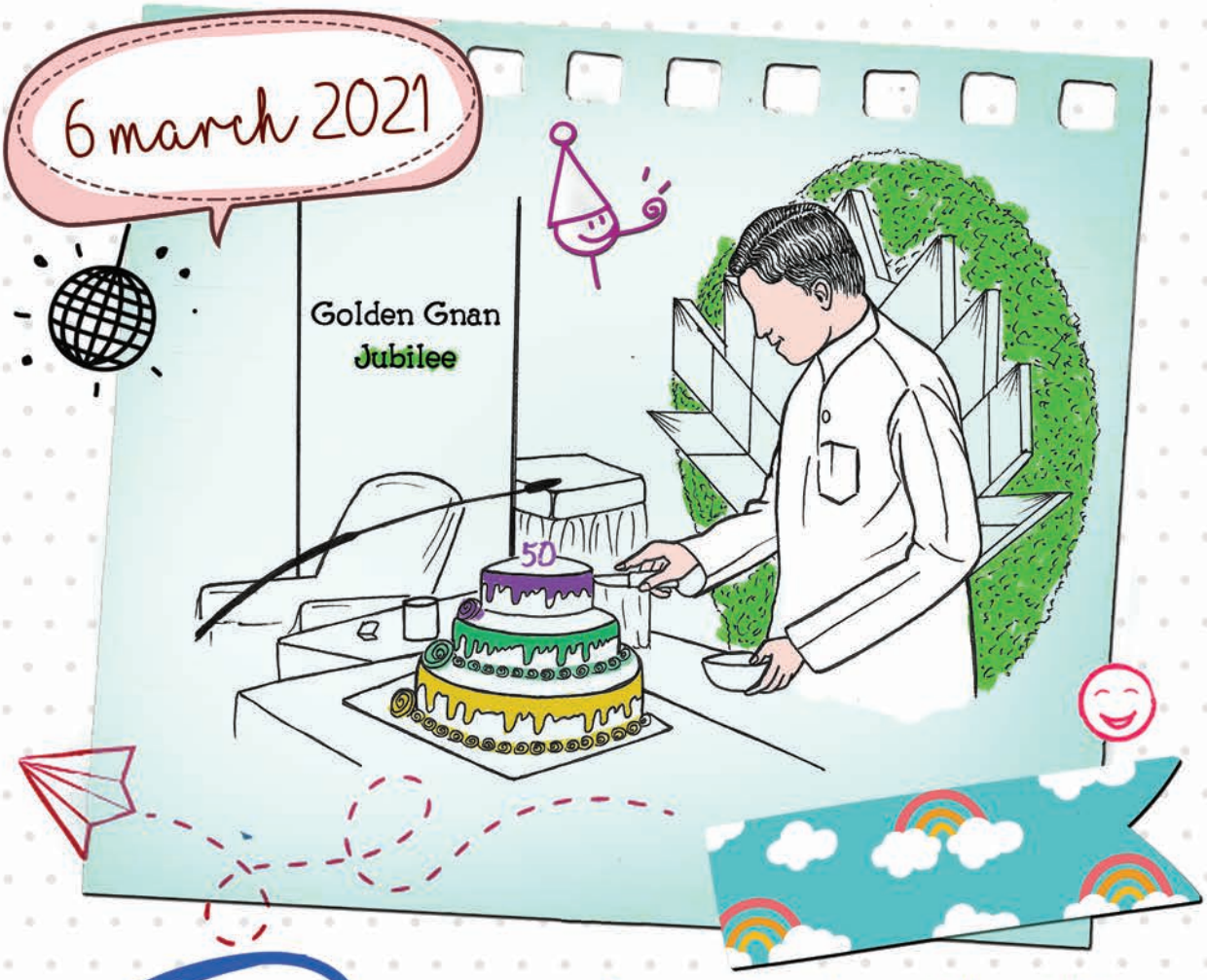

देख-देखकर बनूँ मैं वैसा

आज मार्च ६, २०२१ है। पता है, जन्म से ही पूज्यश्री और मुझमें एक समानता है। क्या?!! पूज्यश्री के ज्ञानदिन के दिन ही मेरा जन्मदिन है। मुझमें और आपमें भी एक समानता है। अरे, वैसे तो बहुत होंगी, लेकिन एक तो ज़रूर है। क्या? अक्रम एक्सप्रेस! २००८ में जब मैं सात साल का था तब अक्रम एक्सप्रेस का पहला अंक प्रकाशित हुआ था। बिल्कुल सही गेस किया आपने! आज मैं बीस साल का हो गया हूँ। और आज मुझे मेरे बीस साल के जीवन की बेस्ट बर्थ डे प्रेजंट मिली है। पापा ने मुझसे कहा, "खुश रहो बेटा। आकाश, तू जिस तरह से मम्मी और मुझे खुश रखता है उससे हमें तो आनंद है ही, लेकिन मुझे विश्वास है कि पूज्यश्री भी तुझसे बहुत खुश होंगे।"

जिन्हें हमेशा खुश करना मेरे जीवन का ध्येय है, वे यदि मुझसे खुश हैं तो मुझे इससे ज्यादा और क्या चाहिए? आज मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं है। और मैं यह खुशी आपके साथ शेयर करना चाहता हूँ। क्या मैं पहले से ऐसा था? नहीं!! लेकिन हाँ, पहले से ही मैं एक डायरी लिखता था। चलो, इस डायरी के कुछ पन्ने मैं आपके सामने खोलकर मेरी लाइफ की स्टोरी आपको बताऊँ।

January 10, 2010

आज मैं 'म ने मेरे साथ गलत किया, मुझे नहीं बल्कि साहिल को मॉनीटर बना दिया। मुझे बहुत खराब लगा। वह मैं 'म के साथ अच्छी-अच्छी बातें करता है और उनके पीछे-पीछे घूमता है। मुझे लगा कि अब मैं भी मैं 'म पर ज़ोरदार इम्प्रेशन जमाऊँगा। लेकिन जब शाम को नाश्ता करते-करते टी.वी. शुरू किया तब पूज्यश्री की बातें सुनकर मेरा प्लान चेंज हो गया।

पूज्यश्री ने कहा,

"इम्प्रेशन पड़े ऐसी जगह से मैं खिसक जाता हूँ। डूब शो-ऑफ क्या करना?! सहज रहना चाहिए। ज्ञानी या तीर्थंकर, कहाँ किसी पर प्रभाव डालने जाते हैं? कोई

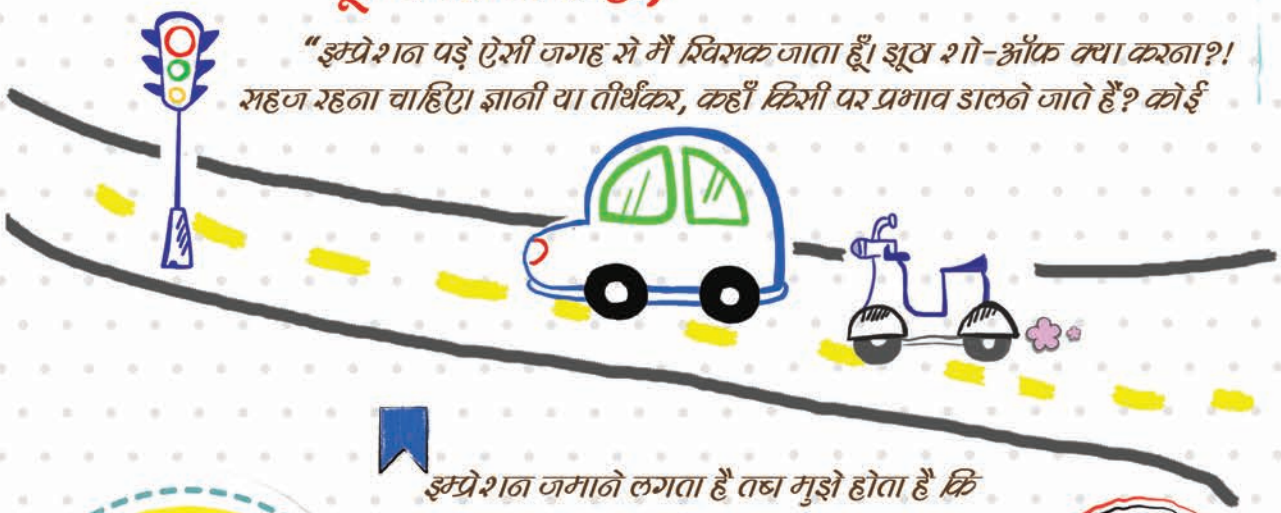

इम्प्रेशन जमाने लगता है तब मुझे होता है कि हाईवे पर लाखों गाड़ियाँ गईं, यदि एक और मेरे आगे चली जाएगी तो मुझे क्या फ़र्क पड़ेगा?!"

दादा का सूत्र है कि, जो कभी भी किसी पर प्रभाव (इम्प्रेशन) डालने नहीं जाता उसका प्रभाव पूरे जगत् में सबसे ज्यादा पड़ता है।

पूज्यश्री की बातें सुनकर तो मैं खुश हो गया। मैंने तो सोच लिया कि अब से मैं भी इम्प्रेशन जमाने की कोशिश नहीं करूँगा।

6 MARCH 2010

आज मेरा बर्थडे है। सुबह ही मम्मी-पापा के साथ मेरा झगड़ा हो गया। उन्होंने मुझसे कहा था कि बर्थडे के दिन मुझे नई वॉच दिलाएँगे लेकिन उन लोगों ने चीटिंग की, मुझे नई वॉच नहीं दिलाई मेरा तो बर्थडे ही बिगड़ गया। मैं सारा दिन गुस्से में ही रहा, फिर शाम को पूज्यश्री के पास गया तो पूज्यश्री कह रहे थे कि,

"मैंने अंत तक मदर-फ़ादर की सेवा की थी। फ़ादर मुझसे नाराज़ हो जाते फिर भी मैं उनके प्रति विनय कभी नहीं छोड़ता था। मैंने तय ही कर लिया था कि मुझे उन्हें दुःख नहीं देना है। लेकिन अगर कभी उन्हें मेरी वजह से दुःख हो जाता तो मैं प्रतिक्रमण कर लेता था। मैंने कभी भी उनके दोष नहीं देखे। मैंने पूरी ज़िंदगी में एक बार भी फ़ादर को पलटकर जवाब नहीं दिया है। अंत में फ़ादर बहुत खुश हुए और मुझसे कहा, तू मेरा गुरु है।"

मुझे तो बहुत खराब लगा, मम्मी-पापा के साथ मैंने गलत किया। मुझे तो पूज्यश्री बहुत अच्छे लगते हैं। वे अपने मम्मी-पापा के साथ झगड़ा नहीं करते थे इसलिए मैं भी नहीं करूँगा। मैंने तो मम्मी-पापा के पैर छूकर 'सॉरी' भी कह दिया।

21 march 2010

सिन्सियारिटी

आज मुझे विज्ञान की परीक्षा में ५० में से ३५ मार्क्स मिले। मुझे तो बहुत बुरा लगा। विज्ञान तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। शायद मैंने कम पढ़ाई की थी इसलिए। मेरा मूड खराब हो गया था। मैं लैपटॉप पर सत्संग देखने लगा। पूज्यश्री बता रहे थे न...

"मेरा ऐसा नियम है कि सुबह आँख खुलते ही सिन्सियारिटी शुरू हो जाती है। उसके बाद पोल नहीं मारनी चाहिए। मेरे लिए काम इतना महत्वपूर्ण है कि उसके सामने मैं अपना खाना, पीना, सोना, घूमना सब माइनस करके, काम के प्रति सिन्सियर रहता हूँ।"

सिन्सियारिटी का मतलब है कि, 'लगे रहना'। फिर चाहे स्पीड धीमी हो तो धीमी, तेज हो तो तेज लेकिन जो काम शुरू किया है उसे पूरा करना है।

मेरे पूज्यश्री एकदम बोस्ट हैं, मुझे भी उनकी तरह सिन्सियर बनना है। पापा कहते थे कि विज्ञान का बहुत महत्व है इसलिए मैं भी अब सिन्सियारिटी से पढ़ूँगा।

WEEKLY GOALS

19 MARCH 2012

सेवा का काम करना है

15 May 2011

इस बार तो समर कैम्प में मज़ा आ गया। दीदीयों ने सेवा पर इतनी अच्छी एक्टिविटी करवाई न! और शाम को तो मेरे पूज्यश्री का सरप्राइज़ सत्संग था। डायरी, यदि मैं तुझसे उनकी बात करूँगा तो तू भी मेरी तरह उनकी फैन हो जाएगी। उन्होंने कहा कि,

मेरी सेवा की शुरुआत, झाड़ू मारने से हुई थी। सत्संग शुरू होने से पहले दरी बिछाता और सत्संग समाप्त होने के बाद सब समेटकर रखता। आरती के समय भगवान को चढ़ाने के लिए फूल लाता और सत्संग समाप्त होने बाद साफ-सफाई करता। जब फ़ॉरेन से महात्मा आते तो उन्हें लेने जाना, छोड़ने जाता और उनके बैग उठाता। कभी सत्संग के बीच में महात्माओं की डाक डालने जाता। यह छोटा या बड़ा काम है, ऐसा नही था। मेरे लिए तो दादा के महात्माओं का काम करना, वह दादा का काम

करने के बराबर ही था। फिर थैला भरकर पदों की किताबें सत्संग में ले जाता और सत्संग समाप्त होने के बाद सब इकट्ठी करके वापस ले आता। किताबें आती तो उनका पैकिंग करता, बाकी की किताबों को मचान पर चढ़ाता आदि कामों से मेरी सेवा की शुरुआत हुई थी। मेरे जीवन का एक ही ध्येय था, चौबीस घंटे दादा का काम करना है।

दादा आते तब उनके जूते, मोज़े, टोपी, कोट उतारता और हैंगर पर लगाता। यात्रा में दादाजी की सेवा करता। रात को दादा के पैरों की मालिश कर देता। दादा ने कहा कि दादा की इतनी सेवा की है इसलिए उनके आशीर्वाद मिले और जागृति बढ़ गई।

डायरी, तुझे पता चला, कोई भी सेवा छोटी बड़ी नहीं होती। आज से मैं भी पूज्यश्री की तरह कोई भी सेवा करने के लिए तैयार हूँ। मुझे तो सिर्फ दादा का बहुत काम करना है।

Akram Express

नीरूमाँ हमेशा कहते कि वे 'स्वीट सिक्स्टीन' हैं! आज, पूज्यश्री के ज्ञानडे के दिन मेरा सिक्स्टीन्थ बर्थडे 'स्वीटेस्ट' था। बेबी से लेकर यूथ, सभी ने पूज्यश्री के साथ मज़ेदार बातें कीं। इट वॉज़ सो नाइस टु नो कि पूज्यश्री के लिए सभी के मन में मेरे जैसी ही फीलिंग्स हैं। सभी को पूज्यश्री जैसा बनना है। डायरी, जितनी बातें याद आ रही हैं उतनी तुझसे कह रहा हूँ।

मैं और पूज्यश्री

मुझे पूज्यश्री बहुत अच्छे लगते हैं और

पूज्यश्री की स्माइल

भी मुझे बहुत अच्छी लगती है। दीपक दादा के गालों में डिम्पल पड़ता है तो बहुत अच्छा लगता है।

जब पूज्यश्री जन्माष्टमी के दिन मक्की फोड़ते हैं वह भी मुझे बहुत अच्छा लगता है।

वे मुझे कृष्ण भगवान जैसे लगते हैं।

मुझे स्केलिंग नहीं आते थे। दीपक दादा को देखकर मुझे स्केलिंग आ गए।

पूज्यश्री को देखकर मेरा सारा गुस्सा शांत हो जाता है। मुझे उनके जैसा बनना है।

हम कितने लकी हैं कि हमें ऐसे ज्ञानी मिले हैं जिनसे हम मिल सकते हैं, प्रश्न पूछ सकते हैं और वे हमारे प्रश्नों के सुंदर जवाब देते हैं।

मैं जब छोटी थी तब मैंने पूज्यश्री को फूल दिया था और पूज्यश्री ने वह फूल मुझे वापस लौटा दिया था, मैंने उस फूल को आज तक संभालकर रखा है।

जिस तरह हम बड़े पेड़ के नीचे रहते हैं तो हमें छाया, फल-फूल वगैरह मिलता है इसी तरह जब पूज्यश्री के साथ रहते हैं न तो उनका प्रेम, उनकी हूँफ, उनकी शीतलता, उनके बहुत सारे गुण सीखने मिलते हैं।

सेवा

मम्मी को कैंसर था। पूज्यश्री के दर्शन करवाने के लिए उन्हें दादा दरबार लेकर गए थे। पूज्यश्री ने मुझसे कहा कि, "अभी मम्मी-पापा की जितनी हो सके उतनी सेवा करना। यह चीज़ आगे जाकर आपको बहुत हेल्प करेगी।" मैंने ऐसा ही किया।

कोई हमें रोक-टोक करता है तो जनरली हमें एक्सेप्ट नहीं होता। लेकिन पता नहीं ज्ञानी में ऐसा क्या है कि वे जो कहते हैं हम तुरंत उसका पालन करने लगते हैं। क्यूज़न कैम्प में पूज्यश्री ने मुझे समझाया कि माता-पिता और टीचर्स के प्रति विनय तो रहना ही चाहिए। तब से ही मैंने पूज्यश्री की बात मानकर, वैसा करना स्टार्ट कर दिया।

2 January 2018

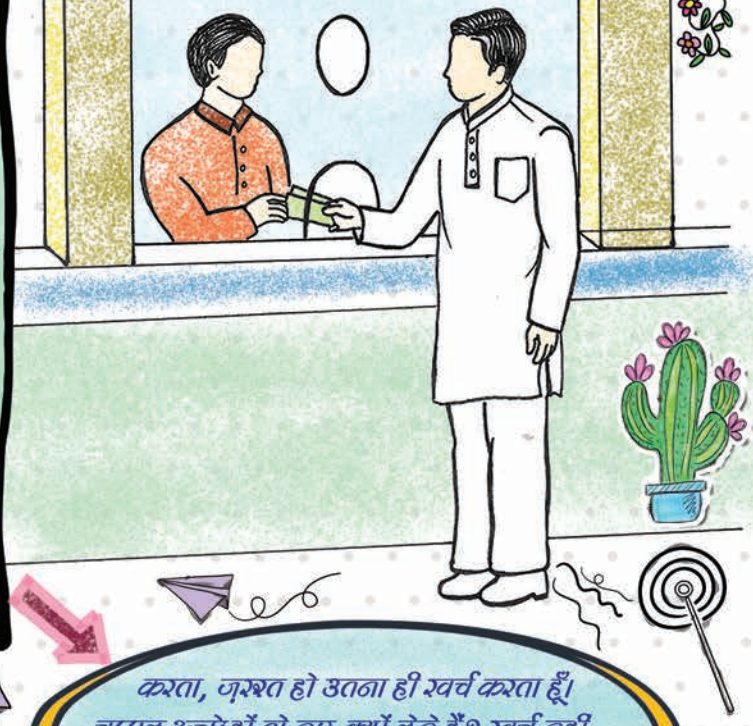

आज मैं फ्रेन्ड्स के साथ रेस्टोरेंट में खाना खाने गया था। डिनर के बाद आदिल कोई बहाना बनाकर बिल भरे बिना ही चला गया। मोटे ने सबसे ज्यादा खाया था और उसके पैसे हमने चुकाए। रात को मैं एक आप्तपुत्र भाई से मिलने गया और उन्हें यह बात बताई। उन्होंने मुझे पूज्यश्री की एक सत्संग क्लिप दिखाई जिसमें पूज्यश्री कह रहे थे,

"दादा भगवान ने मुझे सिखाया था हम किसी के साथ गए हों तो हमें पैसे खर्च कर देने चाहिए। मैं खुद के लिए पैसे खर्च नहीं करता, ज़रूरत हो उतना ही खर्च करता हूँ। चप्पल अच्छे हों तो नए क्यों लेने हैं? खर्च नहीं करता। लेकिन लोगों के लिए खुले हाथ से खर्च करता था। तो ऐसा होता था कि मेरे पास लक्ष्मी आती ही रहती। आती तो लोगों के लिए और खर्च करता, तो और ज्यादा आती। मुख्य बात क्या है कि इससे अंतराय टूटते हैं। जितना दूसरों के लिए खर्च करेंगे उतना अनंत गुना मिलता रहेगा।"

आप्तपुत्र भाई ने हँसकर मुझसे पूछा, "दादा ने पूज्यश्री को जैसा सिखाया। हम भी वैसा कर सकते हैं या नहीं?" मैंने आप्तपुत्र भाई से 'हाँ' कहा। मैंने कहा, "मन बिगाड़े बगैर दूसरों के लिए खर्च करूँगा, इसे आज मैं एक चैलेंज की तरह स्वीकार करता हूँ।"

दूसरों के लिए खर्च करेंगे

आज तो, वर्ल्ड रिकॉर्ड बन गया। मैंने राहिल के नाश्ते में से पोहे खाए, उसमें मीठ नीम था फिर भी। राहिल तो देखता ही रह गया। डायरी, तुझे तो पता ही है कि मम्मी किसी भी चीज़ में मीठ नीम डालती है तो मैं गुस्सा हो जाता हूँ। लेकिन आज तो मैं मीठ नीम चबा-चबाकर खा गया। राहिल का चेहरा तो देखने लायक था। फिर मैं उसे मीठ नीम खाने के पीछेका सीक्रेट बताया कि पूज्यश्री क्या कहते हैं।

"पहले मैं भी खाने में बहुत किच-किच करता था। केला खाऊँगा तो सर्दी हो जाएगी, तीखा खाना पसंद नहीं था, उड़द की दाल खाऊँगा तो पाचन में मुश्किल होगी। एक दिन नीरू माँ

खाने में किचकिच

ने कहा, "क्या किच किच करता है? खा ले कुछ नहीं होगा।" तो फिर शुरू हो गया। अब चाहे जो भी खाता हूँ फिर भी कुछ नहीं होता। पसंद नहीं हो फिर भी एक चम्मच खा लेना चाहिए। धीरे-धीरे निरोगी बनते जाते हैं। करेले की सब्जी नहीं खानी, नहीं खानी करते हैं न, तो जब बीमार पड़ते हैं तब कड़वा ही खाना पड़ता है। इसलिए नॉर्मलिटी रखोगे तो बीमार नहीं होगे।"

मुझे लगता है कि मेरी बात सुनने के बाद तो राहिल भी पूज्यश्री का फैन हो गया है। बीमार नहीं पड़ने का सीक्रेट सुनकर राहिल अब मेरे साथ दीवाली पर क्यूज़न में आने वाला है।

U Turn

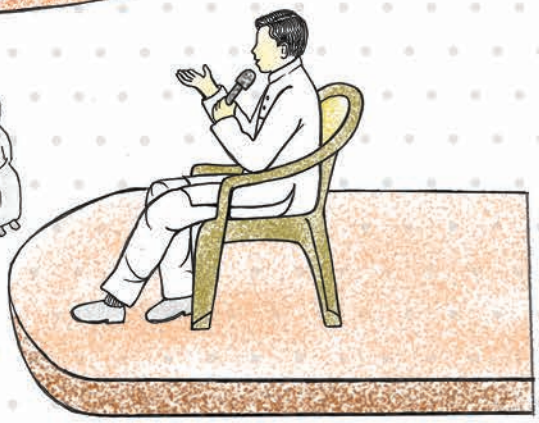

सरलता

4 november 2014

1 आज इंटरस्कूल डिबेट कॉम्पीटिशन के लिए नाम भेजने वाले थे। हमारी स्कूल के बेस्ट स्पीकर्स के नाम सिलेक्ट किए गए। टीचर अभिषेक का नाम भूल गईं जब

2 बाद में टीचर को याद आया तब उन्होंने अभिषेक को बुलाया। लेकिन उसने रुककर बहाना बना दिया और कॉम्पीटिशन में भाग लेने से मना कर

3 दिया। मुझे पूज्यश्री की यह बात याद आ गई,
एक बार कनाडा, टोरंटो में जैन

4 कन्वेंशन था। दीपकभाई उसमें चीफ गेस्ट स्पीकर थे। बड़े-बड़े जैन साधु-साध्वीजी आए हुए थे। उनमें से एक बड़े स्पीकर के बोलने की बारी आई, लेकिन स्टेज पर

5 प्लास्टिक की कुर्सी देखकर वे गुस्सा होकर चले गए। इस सभा में ऑल ओवर द वर्ल्ड से लोग आए थे। कार्यकर्ताओं ने दीपक भाई से स्टेज पर जाने के लिए

6 विनती की। दीपक भाई को तो प्लास्टिक की कुर्सी में कोई हर्ज नहीं था। यह प्रसंग बताते समय नीरूमाँ ने

7 कहा था, "प्लास्टिक की कुर्सी तो क्या, दीपक भाई को नीचे ज़मीन पर बिठाएँ तो भी उन्हें कोई हर्ज नहीं होगा!"

8 मेरे पूज्यश्री कितने महान हैं! उन्हें कहीं भी चलता है और कुछ भी चलता है। तू देखना डायरी, मैं भी एक दिन उनके जैसा ही सरल बन जाऊँगा।

11 March 2015

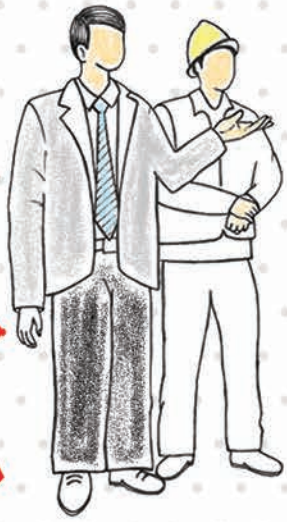

आज मैं अपने कज़िन्स के साथ रेस्टोरेंट गया था। वेटर ने हमारा ऑर्डर लिखने में गलती कर दी। मेरे एक कज़िन का दिमाग बहुत गरम हो गया। लेकिन करण भाई के पास उसे शांत करने का बेस्ट उपाय था। उन्होंने पूज्यश्री की एक बात बताई, जब पूज्यश्री कन्सल्टिंग का काम करते थे तब जब मशीन बिगड़ जाती और बॉस के चीफ़ इंजीनियर आकर कोई प्रश्न पूछते तब पूज्यश्री विनयपूर्वक जवाब देते। सिर्फ इतना ही नहीं, अंडरहैन्ड या वर्कर्स के प्रति भी उतना ही विनय रखते थे। बॉस और वर्कर्स दोनों के साथ लघुता रखते। वे जानते थे कि वर्कर ही मशीन के साथ इतना सारा समय बिताते हैं इसलिए मुझसे ज्यादा उनके पास मशीन का ज्ञान है। इसलिए मशीन

> पूज्यश्री कहते हैं कि पॉज़िटिव देखेंगे तो लघुता में रहेंगे और सामने वाले व्यक्ति पर भी हमारे शब्दों का पॉज़िटिव असर होगा।

रिपेयर के लिए वे वर्कर को अपना गुरु मानते और खुद उनके शिष्य बन जाते। पूज्यश्री कहते हैं कि पॉज़िटिव देखेंगे तो लघुता में रहेंगे और सामने वाले व्यक्ति पर भी हमारे शब्दों का पॉज़िटिव असर होगा।

बस, फिर क्या! कज़िन को खुद के व्यवहार पर अफ़सोस हुआ। और मुझे लगा कि यदि पूज्यश्री अपने वर्कर के शिष्य बन जाते थे तो अब से मैं भी कभी किसी को नीचा समझकर उसका अविनय नहीं करूँगा। सभी का पॉज़िटिव ही देखूँगा।

पॉज़िटिव और लघुता

6 Feb 2013

डायरी, तुझे पता है न, मैं माउंट आबू की टूर में जाने के लिए कितना एक्साइटेड था!! लेकिन आखिरी वक्त में मम्मी ने यह कहकर मना कर दिया कि दादा की तबीयत खराब है। ऐसा कोई करता है?! पता है, आज स्कूल में सभी ट्रिप की ही बातें कर रहे थें। मेरा मूड ऑफ हो गया। इसलिए दोपहर को मैं आप्तपुत्र भाई से मिलने गया। वे एकदम मेरे फ्रेन्ड जैसे हैं। उन्होंने मुझे पूज्यश्री की एक मज़ेदार बात बताई

कई बार ऐसा होता कि पूज्यश्री से वडोदरा जाने के लिए कहा जाता, तो वे तैयार होकर बैठ जाते, लेकिन तभी नीरू माँ वापिस आकर उनसे कहतीं, "आज तुम रहने दो न, दादा का काम करो। जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।" और पूज्यश्री "ठीक है" कहकर, बैग उठाकर वापस अंदर रख देते। "मुझे क्यों मना किया? बाकि सब को ले जाते हैं पर मुझे नहीं," ऐसा कहकर वे कभी भी, रुठे नहीं थे। वे हमेशा ज़रूरी काम करने के लिए एडजस्ट हो जाते। उन्होंने तय किया था कि नीरू माँ जैसा कहेंगे वैसा करना है।

बात पूरी होने के बाद आप्तपुत्र भाई ने हँसकर मुझसे पूछा, "तुझे पूज्यश्री जैसा बनना है या नहीं?" अब मुझे टूर पर नहीं जाने का ज़रा भी दुःख नहीं है।

एडजस्टमेंट

शायरी

मेरी हर एक उलझन का वे सॉल्यूशन देते हैं,
देख देखकर जानूँ मैं वैसा, ऐसी भावना हृदय में होती है!
जैसे सूर्य को देखकर पुष्प खिल जाता है,
वैसे ही पूज्यश्री को देखकर हमारा दिल खिल जाता है,
उनके पास है ऐसी प्योरिटी जो दुनिया में मिलेगी नहीं,
उनका हास्य देखकर लोग जग भूल जाते हैं!

2 july 2014

क्या सब काम मुझे ही करना पड़ेगा?! ग्रुप प्रोजेक्ट में तो सभी को मिलकर ही काम करना चाहिए न? लेकिन मेरे ग्रुप में तो किसी को काम करने में इंट्रेस्ट ही नहीं है। आज तो तय ही कर लिया था कि अब मैं भी काम नहीं करूँगा। भले ही खराब मार्क्स आएँ। जब उन लोगों के खराब मार्क्स आएँगे तब पता चलेगा। फिर मैंने काम छोड़कर अक्रम एक्सप्रेस पढ़ना शुरू कर दिया। और फिर से पूज्यश्री ने मेरा मन बदल दिया। उसमें "पूज्यश्री विद किड्स" में पूज्यश्री ने जवाब दिया था कि,

"मैं अपना काम करता हूँ और वो नहीं करता" ऐसे कम्पैरिज़न नहीं करना चाहिए। सिन्सियरली काम करते रहो और दूसरों के हिस्से का भी काम कर लेना। मैं दूसरों के हिस्से का काम भी कर लेता था। तो आज ऐसा समय आया है कि मुझे अपने हिस्से के काम भी नहीं करने पड़ते।

मैंने आज तय कर लिया कि अब से मैं कभी कम्पैरिज़न नहीं करूँगा। पूज्यश्री की तरह मैं भी दूसरों के हिस्से का काम भी कर लूँगा।

no comparison

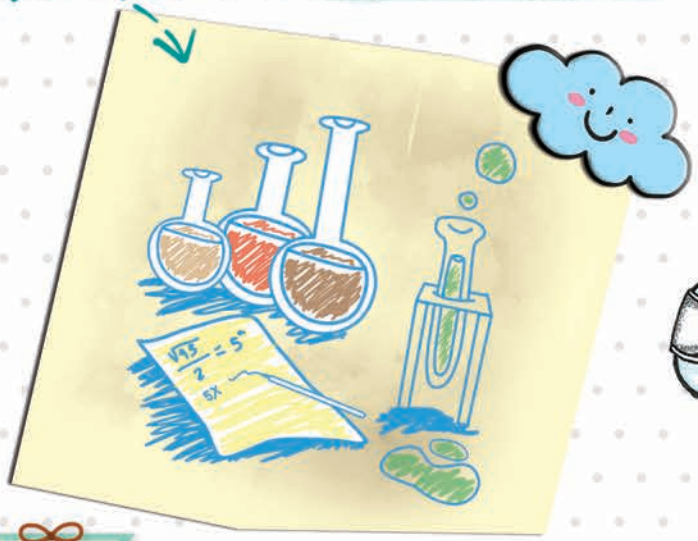

सालों पहले मैंने राहिल के लिए एक कविता लिखी थी। चश्मिश बौरी, क्यूकम्बार की ककड़ी, फूंक मारो तो उड़ जाए, स्विमिंग पूल में डूब जाए! उस समय मुझे यह कविता फ़नी लगी थी। लेकिन राहिल को बहुत बुरा लगा था। कभी राहिल मेरा बेस्टफ्रेन्ड हुआ करता था। लेकिन जब से मैंने यह कविता लिखी तब से उसने मेरे साथ बात करना

बंद कर दिया। मुझे कभी समझ में ही नहीं आया कि इसमें मेरी क्या गलती थी! आज मैंने पूज्यश्री से प्रश्न पूछा कि क्या वे कभी स्कूल-कॉलेज में मज़ाक-मस्ती करते थे? पूज्यश्री ने कहा,

मज़ाक नहीं किया

"मेरा स्वभाव मज़ाकिया था लेकिन किसी को दुःख हो जाए ऐसा मज़ाक नहीं करता था। खेल-कूद करता, मज़ाक-मस्ती करता लेकिन किसी को दुःख हो जाए ऐसा नहीं। कोई बदनाम हो जाए, किसी के अहंकार को ठेस पहुँचे या किसी का मज़ाक उड़ाना, ऐसा सब कभी नहीं करता था। लेकिन सब को आनंद हो ऐसा करता था। दोस्तों के साथ कैरम, चेस, ताश, गिल्ली-डंडा, लट्टू खेलता। लेकिन कभी किसी को दुःख देने की नीयत नहीं थी।"

जो भूल मुझे सालों तक समझ में नहीं आई, वह आज समझ में आई मैंने राहिल का मज़ाक उड़ाया था। कल मैं उससे माफी माँग लूँगा। आई विश कि वह मुझे माफ़ कर दे और हम पहले की तरह बेस्टफ्रेन्ड बन जाएँ।

Information on 'Akram Express' Monthly Magazine - Form 4 (Rule No. 8)
1. Place of Publication: Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. Periodicity of its Publication: Monthly
3. Printers Name: Amba Offset Nationality: Indian
Address: B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025
4. Publisher's Name: Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation Nationality: Indian
Address: Simandhar City, Adalaj – 382421, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. Editor's Name: Dimple Mehta Nationality: Indian Address: Same as above
6. Name of Owner: Mahavideh Foundation Nationality: Indian Address: Same as above
I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.
Date: 08-03-2021, Ahmedabad Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
(Signature of Publisher)

Akram Express

March 2021
Year : 8, Issue : 11
Conti. Issue No.: 96

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

मुझे भी बनना है पूज्यश्री जैसा!

पूज्यश्री, आकाश को जितने अच्छे लगते हैं क्या आपको भी उतने ही अच्छे लगते हैं? उससे भी ज्यादा? आकाश ने तो तय किया कि पूज्यश्री जैसा बनना है। क्या आपने भी ऐसा ही तय किया है? पूज्यश्री को देखकर, उनकी बातें सुनकर, उनके गुणों को पहचानकर, उनकी तरह अपना ध्येय पक्का करके, ध्येय को सिन्सियरली फॉलो करके, आप लोग भी उनके जैसा बन सकते हैं!

आकाश को पूज्यश्री की जो बातें पसंद आती हैं उन्हें वह अपनी डायरी में नोट कर लेता है। वह जहाँ जाता है वहाँ अपनी डायरी साथ में ही रखता है। और इस तरह पूज्यश्री भी उसके साथ ही रहते हैं। क्या आपको भी पूज्यश्री के नज़दीक रहना है? नीचे दी हुई डायरी की फॉरमैट में से कोई एक फॉरमैट पसंद करके या फिर आपका खुद का क्रिएटिव डायरी का फॉरमैट बनाकर अपने दिल की बातें पूज्यश्री से कहो और पूज्यश्री के दिल की बातें समझकर डायरी से कहो।

और इस तरह से पूज्यश्री के साथ में ही रहो!!

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.,** २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025